सुनि मन भावही आपु जाइ अबरी से आगे हम का जोग पठावही ॥९॥ फागुन पिय होते फागु खेलि लजाते
सब के हरी यौ ताके बूंद न पारे जित तिलक के मारि कावनो ॥१०॥ चैत चौदिसा फूल फूले भवरा
पास सोभा ग्रहे तुक मिलि निति हिमा न भमही नी तो पिया अवही न ८ ज्ञा यहे ॥११॥ बैसाख पदि
हरा है प्रियपिय रैनि निषा दिन की नरी रही अवसर भूषन नहि पियक सुजि होर है जगी ॥१२॥ जे
॥१॥ समास तपे जोगि पंछी छाया न पावही लाल धुजा फहरात देखै कौ रथ मावही ॥१३॥ गडारि
॥१॥ होता इन्द्र जिषा तुक मिलि साथ भुलावही पवन डारी चकित भव लापां वरी च कोउ कहो ॥१४॥
मकजा ता श्याम हे पान नवें गला छवावही मी ताके वेगि दामान धरके गुन गावही ॥१६

श्री गणेशाय नमः ।। गर्जी न घुमिर न फिरन बादर मेघ जल भरि लाग्रही । स्याम से कोइ निठुर नाही मास अषाढ
न आग्रही ।। १ ।। असाढ लागत सुनु सखी री घर मन्दिर सब सूने हैं हमरे मूरख कंत रहे जाइ विदेश
परे ।। २ ।। सावन लागत सुनु सखी री झूलन की रितु आगरी गोरी पिनार निरागगाइन पिया विरोगि तका
मिनी ।। ३ ।। भादों नीर अनि बून्त नीर की झरि लावही । स्याम बिना मोर रोय घन्ये ग ठ कंपन का
मिनी ।। ४ ।। क्वार जल थल नीर ... आवन आसा लगी नीर ... जता न ... थ वरदा
हो गई ।। ५ ।। कातिक कानिकर ... जगी ... स्याम नाहि का
है कहो निउ जोगिनी ।। ६ ।। अगहन आया ... पिया सं ... जन हो सं
कोच मन माह ... ।। ७ ।। पूस चो ... सीत ... जो ... जनाह हि
बारी से ... [illegible] ।। ८ ।। माघ ... सुनु सखी री पियाक

॥३॥

कुसुमनुर गुरा आनि ॥ उप हीरा के फूलको दुपहरिया अस जानि ॥१८॥ लाल
गोरो मरोम आनन आपेपी नमहे सखी लिहे कामु रिनी मन ॥१९॥ लाल
॥ मृग नयनी लपरसा ॥ गलविच माला फूलके फूलमाल नीहाथ ॥२०॥ नयन
अरु मुख कमल परागा को हाय ॥ ए सो परिडलपाइये अब पूछन हो लोहि ॥२१॥ पालस ॥२॥
मांगे हे सखी [illegible] किया किहिनि मुरारि ॥ प [illegible] लगा मारि विहाये मोल
लिया हार ॥२२॥ करि सिंगार गजगा मिदन नली हो हाथ ॥ अंकुल फूल सुहावनो लय
पर साथ ॥२३॥ मोरे अंग ना मूंगरा फूले या सब सुवास अंचल परस तलफति फिराय
हि पाश ॥२४॥ एक समय वैठी सखि रहोगी सखि प्रनमा ॥ अरे छि फूल

...नरि मे आनन्द कारज व आवे घर को जा ॥ पिय के हाथ विराजहि फूले सदा वसन्त ॥१०॥ नयन
...मै लेत नन्द निरखे की आस ॥ हरि [illegible] र रस न पावहि सखी फूलनसु देखत न हाथ ॥११॥ प्रीत
...ही लीन्हे [illegible] धास सुवास ॥ चन्दन तौ गुण जनु अंग मे फूल डुल [illegible] पास ॥१२॥ हरि [illegible]
...नन्द सप हिली प्रीतनि संभारि ॥ नागेश्वर के फूल को [illegible] हाथ पसारि ॥१३॥ मन्दम
...तो गावत राग विभास ॥ धंगारहार के फूल को लय आपो पिय पास ॥१४॥ मिल
...री देखत तिम पौ आनन्द ॥ भली भांति सो पिय मिले लीन्हे फूल जिन छन्द ॥१५॥ मि
...त मृगनयनी पिय वपन ॥ चन्द वदन मनन्द वन फूल नेवारी चयन ॥१६॥
...वी वेरी सखि वचन सो पिय परदेसी ही है सखि पास वोपो हाथ पा ॥१७॥ सार

गुलाबको लै आपै पिय सौंज ॥२५॥ करि शृंगार गजगामिनी कीन्हे बहुत शृंगार ॥
फूले फूल बिराजहि अति कन्दहल को हार ॥२६॥ सखिन हि आपै सौं वेदै [illegible]
[illegible] पयिद तन पूछो ता हि ॥ पिय
बिन मन न हि भाव [illegible] हि हारक दम्ब को मो हि ॥२७॥ सखिन हि आपै सौं वेदै रीते
बहुत उपास ॥ सेवन्ति फूल सुहावनो [illegible] पिय मिलवे की आस ॥२८॥
प्रीतम बिछुरे हे सखी करिये बनमन नमन्द ॥ करो फूल सुहावनो कर माल हि सुकुन्द ॥२९॥
प्रति दिन सुन्दर कामिनी शोभित म बिपन साथ ॥ गुरु पर नाम कि हे सबै वी सपै चुरुले तम
०७॥३०॥ [illegible] बालम आपै हेस वी कसन नभये चुरव वास ॥ चलो चरण नेम को फूल केतकी
पा श्री ॥३१॥ इति फूल बोध समाप्तम्